राजनीतिक सिद्धान्तों में याज्ञवल्क्यस्मृति का नैतिक पक्ष : एक विमर्श

डॉ. रवि शंकर

स्मृतिग्रन्थों में धर्म का प्रयोग अधिक व्यापक अर्थ में हुआ है। धर्म से आशय मानव जीवन के सभी अंगों को नियमित करने वाले सिद्धान्त से है। मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे अपनी जिम्मेदारी निभाने की योग्यता प्राप्त करना तथा उसे इसके साधनों से अवगत कराना धर्म का सर्वांगीण स्वरूप है। याज्ञवल्क्यस्मृति में मानव जीवन के सभी अंगों का विशद् विवरण मिलता है, जो बहुत मामलों में मनुस्मृति का अनुसरण करती है। याज्ञवल्क्य कहते हैं, वेद–स्मृति, सज्जनों के आचरण अपने आत्मा के अनुकूल उत्तम कार्य तथा विवेकपूर्ण संकल्प से उत्पन्न हुई इच्छा ये सब धर्म के मूल हैं।

याज्ञवल्क्यस्मृति, धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ होने के कारण धर्म के आधार पर समाज एवं राज्य की सारी व्यवस्थाओं को विवेचित करता है। राज्य एवं समाज की व्यवस्थाओं का निरुपण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से याज्ञवल्क्य ने किया है। वे नैतिक एवं आदर्श पर आधारित राज–व्यवस्था की स्थापना की बात करते है। जब कहीं धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में विरोध हो तो धर्मशास्त्र को बलवान माना है।